Research Article

''दलित संघर्ष में म. फुले और डॉ. आंम्बेडकर का योगदान ''

प्रा.अनिल मनोहर जाधव
विठ्ठलराव शिंदे कला महाविदयालय टेंभुर्णी
तहसिल माढा, जि. सोलापुर।

प्रस्तावना –

दलित संघर्ष में भारतीय समाज सुधारकों में महात्मा फुले और आम्बेडकर जी का नाम सबसे आगे है, क्योंकि समाज सुधार के लिए उन्होने अपना पूरा जीवन अर्पित कर दिया था।

दलित शब्द का अर्थ :–

मसला, रौंदा या कुचला हुआ । मानक हिंदी कोष में दलित शब्द का अर्थ जिसका दलन हुआ हो या जो दब गया हो ।

'मराठी के वाडमयीन संज्ञा संकल्पना कोष' में दलित शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है, हिंदू धर्म ने दलितों को अस्पृश्य मानकर उन पर हजारों वर्षों अन्याय किया, उन्हे मानव के रुप में जीने नहीं दिया, जीने का हक छिन लिया गया वे दलित है।''

केशव मेश्राम दलित की परिभाषा इस प्रकार करते है – ''हजारों बरस जिन पर अन्याय हुआ ऐसे अस्पृश्यो को 'दलित' कहना चाहिए। इस परिभाषा के अनुसार जिन्हे केवल अस्पृश्य मानकर बहिष्कृत किया वे जातियाँ दलित हैं।

ओमप्रकाश बाल्मीकि के अनुसार डॉ. भीमराव आम्बेडकर ने हमें 'दलित' शब्द दिया। इसी वजह से छोटी–छोटी जातियाँ एक हो गई, न कोई मोची, न चमार, न भंगी रह गया। दलित शब्द के अंन्तर्गत ये सभी आ गए। इससे स्पष्ट होता है कि सभी निम्न जातियाँ दलित हैं।

प्राचीन काल से भारतीय समाज में वर्ण–व्यवस्था का प्रचलन रहा हैं। वर्ण व्यवस्था से समाज में जातिवाद एंव भेदाभेद की नीति सक्रिय रही है। जातिवादी व्यवस्था के कारण सामंत, जमींदार, सेठ ठेकेदार, दलाल, भ्रष्ट अधिकारी, पंडित, प्रधान, सरपंच तथा मुंशी आदि दलितों का शोषण करते हैं। दलितो के शोषण से मुक्त करने के हेतु अनेक समाज सुधारकों ने कार्य किया परंतु म. फुले और डॉ. आम्बेडकर जी का नाम सबसे आगे हैं।

म. फुलेजी ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इस की स्थापना आश्विन माह की व्दितीय नवरात्र तदनुसार २३ सितंबर १८७३ को पुना में हुई। पूरे महाराष्ट्र से लगभग साठ प्रतिशत और परखे हुए समाजसेवी एकत्रित हुए, जिन्होंने सर्व सम्मति ज्योतिबा को संस्थापक अध्यक्ष निर्वाचित किय। सत्यशोधक समाज के अनेक उद्देश थे। जिस में ईश्वर एक हैं। सर्वव्यापी है, निर्गुण, निर्विकार और सरल प्राणिमात्रा में व्यापक है, मनुष्य जाति के गुण उसकी श्रेष्ठता प्रमाणित करते है। कोई भी ग्रंथ ईश्वर प्रणीत नहीं है। उसके प्रमाण उपलब्ध है। परमेश्वर अवतार धारण नहीं करता। पुनर्जन्म, कर्मकांड, जप–तप, या धर्म गोष्ठियाँ अज्ञान मूलक है। महात्मा फुले जी ने दलितों को इस प्रकृति से बाहर निकालने का प्रयत्न किया। समाज के सीधे साधे उद्देश्यों से महाराष्ट्र के पिछडे वर्गो जातियों में व्यापक असर पडा। समाज के संस्थापकों में कई सदस्य मुस्लिम, इसाई, पारसी, यहूदी, ब्राहमण, मराठा, कोली, महार, मांग, चमार, कुनबी, और माली आदि जातियों से संबंध रखते थे। इस प्रकार संगठन की स्थापना पुणे भूमि पर हुई थी। परंन्तु धीरे–धीरे पूरे महाराष्ट्र में फैलाता गया।

म. ज्योतिबा फुले व्दारा सत्यशोधक समाज पुरोहित वर्चस्व और उच्च जातियों व्दारा समाज की निम्न जातियों के बौध्दिक–आर्थिक शोषण तथा सामाजिक सांस्कृतिक उत्पीडन और अन्याय के विरुध्द प्रतीकात्मक रुप में एक जन आन्दोलन बनकर सामने आया। म. फुले जी व्दारा एक नई सामाजिक सांस्कृतिक क्रांती का प्रारंभ कहा जा सकता हैं। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज आदि सें सर्वथः भिन्न

इसकी कार्य पध्दति थी। महाराष्ट्र में ज्यों पारंपारिक परम्परायें प्रचलित थी इसी परम्परा को तोडने का प्रयास किया जात था। म. फुले जी के पहले दलित शुद्रो के शोषण और अत्याचारों के विरुध्द संगठित प्रचार भारत के किसी नगर में किसी संगठन या व्यक्ति ने किया होगा। यह सत्यशोधक समाज के व्दारा दिखाया गया। अतः सत्यशोधक समाज एक क्रांतिकारी जन आंदोलन, दलित जनों की आकांक्षाओं का प्रतिक और जागृति का संदेशवाहक बन चुका था। ज्योतिबा और समाज के अन्य प्रभावशाली कार्यकर्ता लोगों को यह बात समझाने का प्रयास किया जाता था कि ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज कुलीन लोगों के दिमाग की उपज हैं। वे आदर्शवादी है, वौचारिक और सैध्दांतिक दृष्टि से उच्च कोटी के दिखते है, मात्र सदियों से दबी-पिसी और शोषित मानवता के कल्याण के लिए उनके पास कोई भी ठोस और व्यावहारिक योजना नहीं थी। उन्होंने कहा की पेशवाओं के जमाने में तलवारों के बल पर ही निर्णय लिया जाता था। पर अब बुध्दि और तर्क के बल पर आगे बढना होगा और इस सबके लिए पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित करना और संगठित रहना परमावश्यक है।

सत्यशोधक समाज के कर्मचारियों को इन्हीं दिनों ब्राह्मण अधिकारियों ने जो उनके अधीन काम करते थे उन्हें नौकरियों में तकलिब करना शुरु कर दिया। अनेक कर्मचारीयों को स्थानांतरित कर दिया। जो अस्थाई कर्मचारी थे उन्हें या तो निकाल दिया या उनकी सेवा में बाधा (व्यवधान) डालने का प्रयास किया गया। म. ज्योतिबा ने इस अन्याय के खिलाफ जोरदार आवाज उठाई। संदर्भ खडा कर दिया। यह सब उच्च जातियों की ओछी मानसिकता का परिचयक था। परंतु म. ज्योतिबा फुले हमेशा उनके खिलाफ झगडते रहे।

सत्यशोधक समाज के अंन्तर्गत फुले जी ने प्रारंभ से ही मिले जातीय एकता पर बल दिया था। वे दलित शुद्र और पिछडी जातियों में समन्वय स्थापित करने के पक्ष में थे। जितनी भी दलित जातियॉ थी उनका उदधार करना एकमात्र उनका उद्देदय था। (यह एक क्रांतिकारी विचारधारा थी।) ज्यांतिबा का एत्यशोधक समाज सुधारवादी था। इसी कारण महाराष्ट्र में बहुत लोकप्रिय हो गया था। अतः षुद्र अतिशुद्र, निम्न वर्ग, किसान, कामगार और दस्तकारों में जागृति निर्माण करनेवाला, फैलानेवाला, क्रांतिकारी परिवर्तन लानेवाला जन आंदोलन निर्माण हो गया था। इस प्रकार नवजागरण काल में म. फुले जी ने बडी सक्रियता व्यावहारिकता एंव दूर दृष्टि का परिचय देते हुए शुद्र-दलित वर्गो में समग्र सामाजिक सांस्कृतिक चेतना और वैचारिक क्रांति का बीजारोपण किया। अतः सामाजिक न्याय और सामाजिक परिवर्तन के प्रयास किए। उनके पश्चात २० वी शताब्दी में डॉ. आम्बेडकरजी ने आगे बढाया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को दलितों का मसीहा कहा जाता है। दलित वर्ग के विकास एंव उत्थान के बारे में जो इन्होंने संघर्ष किया उसे कभी भी भुलाया नही जा सकता हैं और सदियों के लिए इसका नाम भारतीय इतिहास और पाश्चात्या इतिहास में अमर हो गया।

सन १९८० में ज्योतिबा फुले का देहांन्त हो जाने के उपरान्त दलित वर्ग के सामाजिक एंव शिक्षा विभाग का कार्य काफी धिमा हो गया था। दलित वर्ग संघर्ष के समर्थक दो हिस्सो में विभाजित हो गये थे। एक पक्ष मे मध्यम दर्जे की मराठी जाति के बाहरी बुध्दिवादी लोग थे। तो दुसरी ओर वे क्रांतिधर्मी लोग थे जिनका मराठा किसानों में प्रभाव था। पहले पक्ष के लोग शुद्र की बजाय मराठा क्षत्रिय कहलाना श्रेयस्कर समझते थे। सन १९०० में कोल्हापुर के महाराज शाहु महाराज ने इसका नेतृत्व किया। इसका प्रभाव डॉ. आम्बेडकर पर पडा था।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर की अगुवाई मे भारत के महाराश्ट्र प्रांत का महार वर्ग दलित जागृत एंव उन्नत तथा राजनीतिक सक्रियता में विभिन्न दलित वर्गो एंव समुदायों हेतु हरावल दस्ते की भॉति रहा है। किन्तु महार राजनीतिक आन्दोलनों के परिणाम स्वरूप दो परस्पर विरोधी प्रकृतियॉ उभरी है। एक तो दलितो का एक भाग विभिन्न प्रकार की सरकारी सहूलियतों का लाभ उठाकर बुर्जुआ वर्ग में शामिल हो रहा हैं। उसका गांवो और गरीबों से संपर्क नही रह गया हैं। दूसरी ओर गुणवत्ता और सुरक्षा की दृष्टी से अधिकार दलितों को जीवन में गिरावट आ रही । उसका उच्चाटन करने का निश्चय डॉ. आम्बेडकरजी ने किया था और सफल भी हुए। डॉ आम्बेडकरजी ने दलितो को वाणी दी सन १९२० में मुकनायक और सन १९२७ में बहिष्कृत भारत इन दो पाक्षिक पत्रों का संपादन प्रारंभ किया है। इस पत्रिकाओं के जरिये डॉ. आम्बेडकर ने दलितों की वर्तमान आर्थिक, सामाजिक एंव, राजनीतिक

समस्याओं को उजागर किया है। उनकी दयनीय दशा ने उन्हे सामाजिक विसंगतियों पर क्षोभ व्यक्त करने तथा सवर्णों के अन्याय और अत्याचार, शोषण का निर्भीकता से विरोध करने के लिए प्रेरित किया।

इस में पहला प्रयोग महाड सत्याग्रह, महाड सत्याग्रह करने के लिए डॉ. आम्बेडकर की प्रेरणा से प्रेरित होकर लगभग दस-पन्द्रह हजार व्यक्तियों ने अपने मौलिक अधिकार का प्रयोग किया अतः चावदार तालाब की ओर पानी पीने के लिए प्रस्थान किया। परंतु सवर्ण जातियों के लोगांने डॉ. आम्बेडकर और उनके दलित साथीयों पर हमला किया था। प्रतिनिधी यो ने अपने प्राण बचाने के लिए मुस्लिम लोगों का आश्रय लिया। डॉ आम्बेडकर को पुलिस थाने में रुकना पडा। डॉ. आम्बेडकर ने समस्थ समर्थकों को कहा कि आप एक जुट होकर संघर्ष करे तो, एक ना एक दिन अपना आ जाएगा।

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर जी ने दलितो के न्याय हक्क के लिए अनेक प्रयोग किये जिसमें नाशिक का राम मंदिर प्रवेश तथा मनुस्मृति दहन, दलित महार वतनदारों का प्रश्न, दलितों की सत्ता में भागीदारी, दलित और अल्पसंख्यांक समस्याएँ, दलित शिक्षा पर समस्याएँ, समान नागरिकता, दलितों के लिए मौलिक अधिकार अतः दलित अस्पृश्यता को समाप्त करने और समान नागरिकता अधिकार देने के लिए मौलिक अधिकार की संविधान में दर्ज किया जाए। अतः दलितों का उद्धार करने के लिए डॉ. आम्बेडकर संघर्ष करते रहें।

डॉ. आम्बेडकर दलित तथा अल्पसंख्यांक वर्ग इस दावे पर लडते रहे यदि उनकी मांगे उचित रुप से पूरी न की गई तो वो भारत के किसी भी स्वशासन संविधान पर सहमति प्रदान नहीं करेंगे।

स्वतंत्र भारत के संविधान की जब रचना की गई थी, इन्ही सुझावों और मांगो के आधार पर दलितों के सामाजिक राजनीतिक अधिकारों को संविधानिक दर्जा मिला। अंग्रेजो व्दारा सत्ता हस्तांतरण के समय डॉ. आम्बेडकर की यह बात नहीं स्वीकार की गई कि यदि उनके अधिकारों की गारंटी नहीं मिलती है तो वे कोई भी संविधान को अस्वीकार कर देंगे। लेकिन जब संविधान सभा बनी देश में उन्हे छोडकर ऐसा कोई महापुरुष नहीं था तो स्वतंत्र भारत के संविधान की संरचना कर सके। अतः अंम्बेडकर को संविधान रचने का स्वतंत्र भार मिला जो दलितों के लिए एक गौरव की बात है।

अतः भारत में धार्मिक सामाजिक सुधारों के साथ -साथ पुनर्जागरण सार्थक प्रक्रिया महात्मा फुले ने १६ वी सदी के अंतिम दशकों में अस्पृश्य जातियों में स्त्री शिक्षा तथा सामाजिक सुधारों का प्रारंभ पुना में किया था। उसके पष्चात डॉ. आंम्बेडकर जी ने तथा अन्य दलित नताओंने बीसवी सदी में सामाजिक परिवर्तन की दिशा मे किया जानेवाला कार्य आधार स्तंभ और प्ररणा स्त्रोत बन गया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि दलितों को सामाजिक - राजनीतिक अधिकार एक दीर्घ संघर्ष के बाद प्राप्त हुआ था। इसका कारण दलितों का ईश्वर महात्मा फुलेजी और डॉ. भिमराव अम्बेडकरजी का योगदान महत्वपूर्ण माना हैं।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) भारत में दलित संघर्ष एंव सामाजिक न्याय.एन. के. सिंह प्रकाशक - प्रिन्म बुक्स (इंन्डिया), घारगेट रोड, जयपुर.
२) सामाजिक यथार्थ और कथाकार संजीव डॉ.शहाजहान मणेर श्रुति पब्लिकेशन्स, ५० क्र. ६ ज्योंति नगर, जयपुर
३) मराठी कोष ग्रंथ : वाङःमयीन संज्ञा संकल्पना कोष, जी आर. भाटकळ फाउण्डेशन, ३५/सी मुंबई ४०००३४
४) दलितों के जिविन संशर्ष संदर्भ ओमप्रकाश वाल्मीकी, राधाकृष्णा प्रोशान नई दल्ली.